प्राक्कथन

वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यवहार और संस्कृति में आ रहे बदलाव का बैंकिंग जगत पर असर होना अपरिहार्य है. पारंपरिक रूप में, बैंकर-ग्राहक का संबंध आपसी विश्वास और सम्मान पर टिका रहा है. इन तमाम वर्षों में बैंकिंग के शांत रहने वाले माध्यमों में उथल-पुथल हुई, जिनका ग्राहकों द्वारा दुरुपयोग किया जाने लगा है. सम्माननीय बैंकर, अधिकतर अनजाने में और कभी-कभी जानबूझ कर काले धन को वैद्य बनाने वाले लोगों के साधन बन गए. काले धन को वैद्य बनाने वाले लोग नए चालाक ग्राहक हैं जिन्होंने अपनी गैर-कानूनी कमाई को बैंकों में 'स्वच्छ' मुद्रा में परिवर्तित करने के अवसर खोज लिए हैं. वे बहुत ही दुरुह हो गए हैं. और इन कार्यों में शामिल धनराशि इतनी बड़ी है, जो समाज में विघटन पैदा कर रही है.

बैंकों को काले धन को वैद्य बनाने से रोकना है. इसीलिए बैंक अब मूल आधार की ओर लौट रहे हैं. लेकिन इस बार उनके पास अनुभव की कुशलता है. उनकी प्रक्रियाएं केन्द्रित हो गई हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग की बढ़ती हुई भावना के कारण एक जैसे विधान पारित किए गए हैं. बैंकरों ने अच्छे ग्राहकों को संरक्षण देने के लिए खराब ग्राहकों को निकालने की जरूरत महसूस की है और इस प्रक्रिया में वे स्वयं अपनी भी सहायता कर रहे हैं. इस वातावरण में, 'अपने ग्राहक को जानिए' (केवाईसी) बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो गया है, जो लगभग एक मंत्र की तरह है. अन्य सभी मंत्रों की तरह, इस नए मंत्र को भी समझने, निश्चित सावधानी के साथ भलीभाँति व्यवहार में लाने और समान रूप से एवं तेजी से फैलाने की जरूरत है.

इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए इंस्टिट्यूट ने यह पुस्तक प्रकाशित की है. इस पुस्तक में काले धन को वैद्य बनाने एवं केवाईसी प्रक्रियाओं, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों और भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशानिर्देश से संबंधित मुद्दों को शामिल किया गया है. पुस्तक में केवाईसी के बारे में भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशानिर्देशों पर विशेष ध्यान दिया गया है. यह हमारे लिए गर्व की बात है कि भारतीय बैंक संघ ने बैंकों के लिए अपने 'अपने ग्राहक को जानिए' मानकों और धन शोधन निवारण (एएमएल) मार्गनिर्देश टिप्पणी को इस पुस्तक का हिस्सा बनाने की अनुमति प्रदान की है. इस पुस्तक में बहुविकल्पी प्रश्न भी दिए गए हैं, जो उन लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे जो इंस्टिट्यूट की 'एएमएल और केवाईसी प्रमाण-पत्र' परीक्षा में बैठना चाहते हैं.

'केवाईसी' केवल काले धन को वैद्य बनाने से रोकने के लिए ही नहीं, बल्कि बैंकों में इन दिनों हो रही कई प्रकार की धोखाधड़ियों की जांच के लिए भी महत्त्वपूर्ण है. इसके अलावा, यह ग्राहक सेवा का एक महत्त्वपूर्ण साधन है.

इंस्टिट्यूट को विश्वास है कि यह पुस्तक सभी बैंक कार्मिकों और उन लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी जो बैंकर बनना चाहते हैं. यद्यपि यह पुस्तक एक निश्चित सीमा तक ज्ञान प्रदान कर सकती है, किंतु

आगे की जानकारी अभ्यास, पर्यावरणीय परिवर्तनों के बारे में जागरूकता और परिचालन दिशानिर्देश में होने वाले समानान्तर परिवर्तनों से ही मिल सकती है. इंस्टिट्यूट इस पुस्तक के लेखक, भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्व मुख्य महाप्रबंधक श्री एस.सुंदर को इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक के लिए धन्यवाद देता है और इस प्रयास में उनके द्वारा दी गई सहायता के प्रति अपना आभार प्रकट करता है. यह इंस्टिट्यूट इस पुस्तक में 'केवाईसी/एएमएल के संबंध में निर्देशक टिप्पणियों' को शामिल करने की अनुमति प्रदान करने के लिए आईबीए का भी आभारी है.

'अपनी बैंकिंग को जानिए' श्रृंखला में हमारी तीसरी पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है.

जनवरी 2014
मुंबई

आर. भास्करन
मुख्य कार्यपालक अधिकारी